महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों की समसामयिकता

डॉ० अशोक कुमार शर्मा
प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
निम्स स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटिज एण्ड सोशल साइंस
निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान

श्वेता गौतम
शोधार्थिनी
निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान
ईमेलः shwetagautam07@gmail.com

सारांश

व्यक्ति एवं समाज की उन्नति के लिए शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो कालान्तर समाज के प्रति उन्मुख रूप से प्रगति के पथ पर है। महात्मा गाँधी जी के शिक्षा संबंधी विचारों, दर्शन, आदि के रूप में शिक्षा को मजबूत माध्यम माना जाता है, शिक्षा की शोषण विहीन समाज का निर्माण करने में मुख्य भूमिका रही है। उनका मानना था कि समाज के हर एक तबके के सदस्यों को शिक्षित होना आवश्यक है। देश की प्रगति व स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण हो गए हैं, आज शिक्षा की व्यवस्था मानक व सुचारू रूप में चल रही है। शिक्षा समाज का ऐसा हिस्सा है, जिसके द्वारा देश की प्रगति व वैश्वीकरण की स्थिति तेजी से प्रगति कर रही है। शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना सम्भव नहीं है। गाँधी जी के शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी है, उन्होंने शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों, सिद्धांतों तथा शिक्षा की योजनाओं को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया है। गाँधी जी के प्रयत्नों से देश में आधुनिक शिक्षा का सपना साकार हो सका है। दर्शन, साहित्य व वैचारिकी के रूप में भारत उचित शिक्षा व ज्ञान दर्शन के आधार पर सक्षम राष्ट्र बन रहा है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 04.06.2023
Approved: 26.09.2023

डॉ० अशोक कुमार शर्मा, श्वेता गौतम

महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों की समसामयिकता

RJPP Apr.23-Sep.23,
Vol. XXI, No. II,

PP. 256-260
Article No. 35

Online available at:
https://anubooks.com/journal/rjpp

प्राचीनकाल से ही भारत शिक्षा, दर्शन व ज्ञान का मुख्य केन्द्र रहा है। जहाँ दर्शन ज्ञान के साथ–साथ धर्म की महत्वता रही है। हमारे भारत में शिक्षा का उद्देश्य धर्माचरण की वृत्ति जागृत करना था। शिक्षा की महत्वता, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए सर्वोपरि माना गया है। इनका क्रमिक विकास ही शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य था। धर्म से विपरीत होकर अर्थ लाभ करना मोक्ष प्राप्ति का मार्ग अवरुद्ध करना था। मोक्ष जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य माना जाता है और यही शिक्षा, ज्ञान की महत्वता का मुख्य लक्ष्य है।

व्यक्ति और परिस्थिति विशेष की महत्वता देखी जाए तो गाँधी जी जीवन के बड़े कलाकार थे। उनका जीवन आध्यात्मिक अधिश्ठान पर खड़ा था। उनके जीवन का कार्य एवं व्यवहार ही अपने आप में शिक्षा का साकार रूप था। ''राजनीतिक विचारधारा के क्षेत्र में यद्यपि उन्होंने किसी 'वाद' को जन्म नहीं दिया, क्योंकि वे अपने साथ किसी 'वाद' को छोड़कर जाने मे विश्वास नहीं करते थे तथापि उनका कुछ मौलिक सिद्धांतों में विश्वास था, जो उनके जीवन दर्शन का आधार था।''[1] गाँधी जी का विचार था कि जो व्यक्ति शिक्षा को एक व्यवसाय के रूप में ग्रहण करता है वह आदर्श अध्यापक नहीं बन सकता। एक अध्यापक आदर्श तभी हो सकता है जब वह अपने कार्य को सेवा और कर्म के रूप में स्वीकार करे।[2]

''गाँधी जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसकी नींव न्याय, समानता व शांति पर आधारित हो। आधुनिक भारत में गाँधी जी का स्वप्न उनके शिक्षा संबंधी विचारों से अवरुद्ध था। वास्तव में जो कुछ भी गाँधी जी ने कहा या किया वह उनके स्वप्नों के भारत के निर्माण में प्रासंगिक था क्योंकि उनके पास एक समन्वित दृष्टि थी। 'इवान इलीन' या 'पौलो फ्रेरे' की तरह गाँधी जी ने अपने स्वच्छंद एवं स्वतंत्र भारत के लिए औपनिवेशिक शिक्षा को अनुचित बताया।''[3] उन्होंने 1957 में ही अपने 'एज्यूकेशनल रीकांस्ट्रक्शन' में कहा था कि वे कॉलेज में शिक्षा क्रांति लाएंगे तथा इसे राष्ट्र की आवश्यकताओं के साथ जोड़ेंगे। उन्होंने कहा था कि विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए डिग्री दी जानी चाहिए तथा इन पाठ्यक्रमों को विभिन्न उद्योगों के साथ संलग्न किया जाना चाहिए, जो अपनी आवश्यक स्नातकों के प्रशिक्षण का खर्च स्वयं उठाए। वे स्वावलम्बी स्कूलों, उद्योग, संस्थानों व समर्थित कॉलेजों के समर्थक थे। उनका पूर्व शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न एक नवीन शिक्षा प्रणाली जो ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले व्यापक जनसमुदाय के लिए हितकारी हो।

महात्मा गाँधी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में देशव्यापी काम बहुत बड़े पैमाने पर किया थे। जब 1915 में वे दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे तभी से वे हमारे देश के एक समर्थ लोक शिक्षक बन गए थे। उनके लेखों और भाशणों में हर जगह हमें शिक्षा की झलक मिल ही जाती है। महात्मा गाँधी जी के विचार आज भी उतने ही नए और अध्ययन हैं, जितने कि पहले थे। भारत के स्वाधीन हो जाने के बाद शिक्षा कैसी हो, उनका आदर्श क्या हो, शिक्षा का योग माध्यम क्या हो आदि अनेक प्रश्नों पर गाँधी जी ने अपने विचार व्यक्त किये थे। ''गाँधी जी ने शिक्षा का उद्देश्य बताते हुए कहा था जो चित्त की शुद्धि न करें, मन और इन्द्रियों को वश में रखना न सिखाए निर्भयता और स्वालम्बन पैदा न करें, निर्वाह का साधन बताए, ऐसी शिक्षा प्राप्त करना व्यर्थ होगा। महात्मा गाँधी जी के अनुसार 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् जो मुक्ति के योग्य बनाये वह विद्या है बाकी सब अविद्या है।''[4]

''गाँधी जी ने आधुनिक शिक्षा पद्धति पर कटाक्ष करते हुए कहा था कि कुछ मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली शिक्षा पद्धति ने शिक्षित और अशिक्षित के बीच गहरी खाई खोद दी है। शिक्षित मनुष्य का अर्थ यह समझा जाता है कि व्यक्ति को किन अंग्रेजी भाषाओं की जानकारी है या होनी चाहिए। इस तरह की शिक्षा ने भोग और सम्पत्ति में इतनी श्रद्धा उत्पन्न कर दी कि उनके कम होने के डर से भी शिक्षित व्यक्ति व्यग्र हो जाते है।''[5]

गाँधी जी के विचार वस्तुतः उनके शिक्षा–संबंधी प्रयोगों पर आधारित है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा योजना बालकों के स्वावलम्बन से संबंधित उन्होंने बुनियादी शिक्षा में स्वावलम्बन को मुख्य स्थान दिया। गाँधी जी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन से घनिष्ट रूप से संबंधित है। गाँधी जी का विचार है कि सत्य, अहिंसा, सेवा, निर्भयता इत्यादि ऐसे जीवन के उद्देश्य हैं जिनको केवल शिक्षा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान शिक्षा में आज दोश प्रतीत होता है कि शिक्षा सभी मनुष्यों को एक समान नहीं देखती है जबकि गाँधी जी चाहते थे कि शिक्षा ग्रहण करके मनुष्य दूसरे मनुष्य को एक समान समझे। गाँधी जी मनुष्य के श्रम की गरिमा को बनाए रखना चाहते थे ताकि मनुष्य को समान श्रम के लिए समान वेतन प्राप्त हो।

गाँधी जी का विचार है कि शिक्षा द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए तथा समस्त भाषाओं में इनका प्रथम स्थान होना चाहिए। बालक को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो उसे एक आदर्श नागरिक बनाए। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को इस योग्य बनाना होना चाहिए कि वह जब शिक्षित होकर विद्यालय से बाहर निकले तो बिना किसी कठिनाई के जीविकोपार्जन कर सके।

गाँधी जी वास्तव में व्यक्ति और समाज दोनों के जीवन की पुनर्रचना करना चाहते थे और शिक्षा के द्वारा नये मूल्य देना चाहते थे। इस सन्दर्भ में हमें शरीर श्रम का अर्थ अनेक द्वारा समर्थित शिक्षा प्रणाली के आधार के रूप में करना है। इस ढंग की शिक्षा का वर्तमान युग में भारतीय शिक्षा दर्शन पर गहरा प्रभाव है। ''शिक्षा के प्रमुख तात्कालिक उद्देश्य विभिन्न है जिनमें प्रमुख है बालक को पवित्रता प्रदान करके उसके चरित्र का निर्माण करना, बालक को बड़े होने पर जीविका उपार्जन करने के योग्य बनाकर व्यक्ति को हर प्रकार की दासता से मुक्त करके उसकी आत्मा को उच्चतर जीवन की ओर ले जाना, बालक को अपने व्यवहार में अपनी संस्कृति को व्यक्त करने का प्रशिक्षण देना तथा बालक की शारीरिक, मानसिकता और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास करना आदि।''[6]

गाँधी जी ने शिक्षा संबंधी सुधारों, पाठ्यक्रम व बुनियादी शिक्षा पर गहनता से जोर दिया जिससे कि भारत में शैक्षणिक सुधार विद्यार्थी के हित में हो सकें। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री स्ट्रेचर ने लिखा है ''शिक्षा वह है जो विद्वान के कार्यों में अन्तर ला देती है। शिक्षा प्राप्त करने के कारण ही शिक्षित व्यक्ति का समाज में दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक आदर होता है। वह विद्वान और अनुभवी महापुरुषों के गंभीर विचारों को शिक्षा के कारण ही सरलता से ग्रहण कर लेते है। शिक्षित होने के कारण ही भारतीयों ने सारे विश्व में अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार किया है।''[7]

भारत में जो कार्य शिक्षा के लिए किए गए व सराहनीय माने गए हैं। गाँधी जी ने अनुभूति माध्यम से शिक्षा के सभी माध्यमों को प्रभावी बनाने की पहल की है। गाँधी जी ने शिक्षा के अन्तिम उद्देश्य को इन शब्दों में व्यक्त किया है अन्तिम वास्तविकता का अनुभव, ईश्वर और आत्मानुभूति का ज्ञान है।

''वर्तमान शिक्षा पद्धति के तहत शारीरिक एवं धार्मिक शिक्षा प्रणाली पर आधारित बल नहीं दिया गया। केवल मस्तिष्क को शिक्षित करने का प्रयत्न किया गया है। जबकि गाँधी जी के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा नहीं होना चाहिए जो बालक का केवल बौद्धिक विकास करें, गाँधी जी ने मुख्यतः क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम को महत्व दिया है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम को महत्व दिया है। उनकी बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम हस्तकौशल, कृषि आदि से संबंधित है।''[8]

गाँधी जी ने आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा पर बल दिया। उनका कहना था, शिक्षा बालकों को बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार की सुरक्षा देनी वाली होनी चाहिए। वार्शिक कोर्सों के बाद क्रमानुसार परिवर्तन होने चाहिए। बालक को पवित्रता प्रदान करके उसके चरित्र का निर्माण करना, बालक की आयु के परिवर्तन के साथ जीविका उपार्जन करानी चाहिए, भय से मुक्ति, दासता से मुक्त करके उसकी आत्मा को उच्चतर जीवन की ओर ले जाना, बालक का व्यवहार अपनी संस्कृति का गहन अध्ययन करके जीवन को सुचारू रूप से विकसित करना चाहिए।

ध्यान और ईश्वर में दृढ़ विश्वास के माध्यम से भय पर विजय प्राप्त की जा सकती है। गाँधी जी के आध्यात्मिक विचार सम्पूर्ण विश्व में आतंकवाद, नस्लीय और धार्मिक संघर्षों से वर्तमान सामाजिक संकट के लिए नवीन ऊर्जा के रूप में काम कर सकते हैं। उनकी यह विचारधारा मनुष्य को मिलनसार बनाती है। गाँधी जी को विश्व के सभी कोने में अहिंसा और उनके सर्वोच्च मानवतावाद के उत्साही पालन के लिए याद किया जाता है।

निष्कर्ष

गाँधी जी के उक्त विचारों के आधार पर शिक्षा संबंधी विवेचन उनके चिंतन व दर्शन आदि पर पाश्चात्य परम्परा का भी प्रभाव था। उनके मतों में शिक्षा समाज व शोषणविहीन समाज को शिक्षित करती है, जो गाँधी जी के जीवन दर्शन के साथ–साथ शिक्षा दर्शन के व्यापक रूप में देखने को मिलती है। गाँधी जी का मानना था कि प्रस्तुत शोध के माध्यम से गाँधी जी शिक्षा दर्शन की सम्पूर्णता में प्रवेश किया जा सकता है। शिक्षा के आधार पर जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति होनी चाहिए। जीवन के लक्ष्य की खोज पर निर्धारण दर्शनिकता होनी आवश्यक है। दार्शनिक चिंतन, मनन एवं तर्क के आधार पर ही जीवन के लक्ष्यों में बदलाव की नवीन कड़ी का निर्धारण किया जाना चाहिए, जो मौलिक तथ्यों के आधार पर सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर अपनी शिक्षण व शैक्षिक विचारों, दर्शन की महत्वता, आर्थिक व राजनैतिकता को सुलभ व कौशल बनाने में सक्षम होनी चाहिए।

सन्दर्भ

1. वर्मा, डॉ० कीर्ति. भारतीय शिक्षा दर्शन. रोशनी पब्लिकेशन्सः कानपुर, पृष्ठ **7.**
2. मित्तल, प्रो० एम०एल०. शिक्षा सिद्धांत. लॉयल बुक डिपोः मेरठ. पृष्ठ **349.**

3. यादव, डॉ० सतवीर. (2016). महात्मा गाँधी : व्यक्ति और विचार. आस्था प्रकाशनः जयपुर. पृष्ठ० **138.**
4. वही. पृष्ठ **148.**
5. सक्सेना, एन०आर० स्वरूप. शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री. आर० लाल बुक डिपोः मेरठ. पृष्ठ **197.**
6. यादव, डॉ० डी०एस०. गाँधी दर्शन विविध आयाम. आस्था प्रकाशनः जयपुर. पृष्ठ **235.**
7. वही. पृष्ठ **237.**
8. यादव, डॉ० सतवीर. (2016). विजय लक्ष्मी यादव. पृष्ठ **156.**